इमाम हसन अ० की सन्धि

मौलाना सै० अदील अख़्तर साहब

अब हम चाहते हैं कि इमाम हसन (अ०) की स्थिति पर नज़र डालें और आपकी सन्धि पर विचार करें कि पैग़म्बर (स०) के दीन की ज़िम्मेदारी लिए हुए क्या करना चाहिए था।

आप 15 रमज़ामन सन् 3 हि० को "मदीने" में पैदा हुए। हज़रत पैग़म्बर (स०) की शहादत के समय आपकी आयु कुछ ऊपर 7 वर्ष थीं आपकी हैसियत और हालत साधारण बच्चों जैसी न थी। खुदा और पैग़म्बर (स०) की ओर से महत्वपूर्ण विशेषता रखते थे। "ततहीर" की आयत (हज़रत पैग़म्बर स० और उनके कुटुम्ब की पवित्रता की घोषणा करने वाला कुरआनी वाक्यद्ध आप पर भी चरितार्थ होती थी।

"मुबाहिले" के एक सदस्य थे, किसी बच्चे से "बैअत" न लेने के बावजूद हज़रत पैग़म्बर (स०) का आप से "बैअ़त" लेना और आपको सम्बोधित करना यह सब ऐसे सत्य हैं जो बताते हैं कि आप की हैसियत साधारण बच्चों जैसी न थी।

हिसाब लगाया जाय तो आपको पूरे 25 वर्ष इस दशा में गुज़रे कि आप मुसलमानों की हालत का निरन्तरता के साथ भरपूर अध्ययन करते रहे। जब 21 रमज़ान सन् 40 हि० को अमीरूलमोमिनीन (अ०) की शहादत हुई उस वक़्त इमाम हसन (स०) की आयु 37 वर्ष थी। और आप की "बैअत" करने वाले मुसलमान होने के वही दावेदार थे, जिन्होंने अमीरूलमोमिनीन (अ०) की "बैअत" की थी। और जो "नख़ीला" नामक स्थान से कड़ी चेतावनी, उत्साहवर्धन, प्रताड़न, प्रलोभन के बावजूद "मुआविया" से युद्ध पर तैय्यार नहीं हुए थे और इधर-उधर छिटक गए थे।

अब उपरोक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए देखना यह है कि इमाम हसन (अ०) की नीति क्या होनी चाहिए थी। आज तो अदूरदर्शी कह रहे हैं कि इमाम को सुलह (सन्धि) न करनी चाहिए थी। अगर कहीं आप ने सैनिक कार्यवाही भी न की होती तो न जाने दुनिया और कितनी मतभ्रष्ट करने वाली राय पर जम जाती।

प्रबल सम्भावना यही है कि आप ने "बैअत" करने वालों की मनोवृत्ति से अवगत होने के बावजूद नादानों की ज़बान बन्द करने और अदूरदर्शियों पर अपना प्रमाण सिद्ध करने के लिए लड़ाई का इरादा कर लिया और देखने में कोई कोर कसर न छोड़ी।

आप की "बैअत" होने की ख़बर सुन के "मुआविया" 10 हज़ार फौज ले के "बग़दाद" से 45 कि० मी० दूर स्थित "मसकन" नामक स्थान में आ उतरा। यह "बग़दाद" से "तक़रीत" की दिशा में "अवामा" के निकट स्थित है।

इमाम हसन (अ०) ने भी मुक़ाबिले के लिए सेना की कमान स्वतः सम्भाली और "क़ैस बिन साद बिन इबादा" के साथ 12 हज़ार सेना भेजी ताकि "मुआविया" की बढ़त को रोकें और खुद सेना लेकर "कुफ़े" से साबात मायदान में आ गए। परन्तु कुछ ही दिनों बाद "मदायन" में एक झूठी ख़बर फैल गई कि "क़ैस" मारे गए। "तारीख़े कामिल" और "तारीख़ बिन वाज़ेह" से पता चलता है कि यह समाचार "मुआविया" ने प्रचारित कराया था। इससे इमाम हसन (अ०) की फ़ौज में बग़ावत फ़ैल गई।

वही लोग जो आप के साथ होकर "मुआविया" का मुक़ाबिला करने की बात कर रहे थे, आप के ख़ेमे पर टूट पड़े। आप का सब माल असबाब लूट लिया। आपके नीचे से जानमाज़ तक खींच ली और कांधे से चादर उतार ली। इस उपद्रव में आप की रान पर एक अभागे ने ऐसा वार भी किया जिससे हड्डी तक का गहरा घाव लगा मगर "रबीज़ा" और "हमादान" के कुछ बहादुरों ने आपको बचा लिया अब मजबूरन आप "मदायन" के "कर्से-ए-अब्वज़" में चले गए और उपचार में व्यस्त हुए।

कुछ पथभ्रष्टों ने "मुआविया" से रिश्वत लेके यह षडयन्त्र रचा कि आपको गिरफ्तार करके "मुआविया" के हवाले कर दें। उनके कुछ सरदारों ने गुप्त पत्राचार द्वारा "मुआविया" का आज्ञापालन स्वीकार कर लिया और उन्हें लिखा कि "आप अतिशीघ्र "इराक़" आ जाइए

हम ज़िम्मा लेते हैं कि इमाम हसन (अ०) को गिरफ़्तार करके आप को सौंप देंगे। " (हबीबुससियर और इब्ने असीर)

उपरोक्त परिस्थितियों में इमाम हसन (अ०) के लिए समझौते के अलावा क्या चारा हो सकता था। यहां पर यह इबारत जो अल्लामा "इब्ने असीर" ने अपनी "तारीख़ कामिल" में लिखी है ध्यान देने योग्य है:-

"कहा गया है कि इमाम हसन (अ०) ने शासन "मुआविया को इस लिए दे दिया कि जब "मुआविया" ने इसकी मांग की और आप को पत्र लिखा तो आपने लोगों को सम्बोधित किया और ईश्वर की प्रशंसा और धन्यवाद के उपरान्त (कूफ़े के लोगों से) फ़रमाया कि "देखो हमको शाम वालों से इसलिए नहीं दबना पड़ रहा है। कि (अपनी सत्यता में) हमको कोई सन्देह या लज्जा है। बात तो मात्र इतनी है कि हम शाम वालों से सुरक्षा और सन्तोष के साथ लड़ रहे थे मगर अब सुरक्षा में शत्रुता और सन्तोष में विलाप मिश्रित कर दिया गया। जब तुम लोग "सिफ़्फ़ीन' को जा रहे थे तब तुम्हारा दीन (धर्म) तुम्हारी दुनिया पर वरीयता रखता था। लेकिन तुम लोग अब ऐसे हो गए हो कि आज तुम्हारी दुनिया तुम्हारे दीन से आगे हो गई है। इस समय तुम्हारी दोनों और दो प्रकार के हत हैं। एक "सिफ़्फ़ीन" में काम आने वाले जिन पर रो रहे हो दूसरे "नहरवान" में मारे जोने वाले, जिनके ख़ून का बदला चाह रहे हो। सारांश यह है कि जो बाक़ी है वह साथ छोड़ने वाला है और जो रो रहा है वह तो बदला लेना चाहता ही है। भलीभांति समझ लो कि "मुआविया" ने हमसे जो चाहा है न उसमें आदर है न न्याय। अतः अगर तुम लोग मौत पर तत्पर हो तो हम उसकी मांग ठुकरा दें और हमारा उसका निर्णय ख़ुदा के नज़दीक भी तलवार की बाढ़ से हो जाये और अगर तुम जीना ही चाहते हो तो फिर जो उसने लिखा है मान लिया जाय और जो तुम्हारी इच्छा हो वैसा हो जाय।" यह सुनना था कि चारों ओर से लोगों ने चिल्लाना शुरू कर दिया जीवन-जीवनए सन्धि-सन्धि।'

इन परिसिथितियों में केवल यही उपाय शेष था कि सन्धि करके अपना अपना और उन सभी लोगों का जीवन बचा लें जो पैग़म्बर के दीन के नाम लेवा और सच्चे अनुयायी थे। जिनको सिद्धान्त-रक्षा अत्यन्त प्रिय थी और जो उंगलियों पर गिने जा सकते थे। न यह कि इन तथाकथित "बैअत" करने वालों के हाथ में पड़के "मुआविया" के बन्दी बनें और क़त्ल हो जायें। और फलस्वरूप वह शिक्षा और धर्म जिसके ध्वजा रोहक पैग़म्बर के "अहले बैत" थे उन शहीदों समेत दफ़्न हो जाए। ज़िन्दा रहने का एक उद्देश्य यह भी था कि पैग़म्बर का दीन जो "मुआविया" और उनके पक्षधरों के यहाँ वध किया जा रहा था ज़िन्दा बच जाए और भलीभांति प्रचरित हो जाए कि पैग़म्बर की वास्तविक शिक्षा और दीन क्या है साथ ही साथ सन्धि-काल इतना रख लिया जाए कि इस आवाज़ को इतनी दूर तक और इस ढंग से पुष्ट कर लिया जाए कि आगे चल के मुआविया से बढ़ चढ़ के भी कोई इस्लाम के विनाश के लिए खेल खेले और खुले आम पैग़म्बर के दीन को अस्तित्व पटल से मिटाने में संलग्न हो जाए तब भी यह बात उसके बस से बाहर रह जाए और उसका स्वप्न कभी पूरा न हो सके।

यह उद्देश्य इमाम हसन (अ०) के दृष्टिगत बराबर रहा हक आने वाले "ज़िब्हे अज़ीम" को सफ़लता की सामग्री दे जायें चाहे इसके वास्ते मौत से भी दुष्कर मानसिक यातनायें सहनी पड़ें। परन्तु यदि इमाम हसन (अ०) इस तरह जान दे देते और मुआविया से सुल्ह न किए होते तो यह उद्देश्य कदापि प्राप्त न होता। जिन लोगों ने इमाम हुसैन (अ०) की शहादत और इमाम हसन (अ०) की सन्धि का केवल सरसरी नज़र से अध्ययन किया है वह धोखे में हैं। अगर इमाम हुसैन (अ०) की फौज के सरदारों में "अशअस' ऐसे लोग होते और आप को भी "मुआविया" सरीखे व्यक्ति से लड़ना पड़ता। "हुज्र बिद अदी" को क़त्ल भी करता जो इमाम हसन (अ०) ने किया। बल्कि इमाम हुसैन (अ०) ने "मुआविया" के साथ तो वैसा ही बर्ताव किया जैसा इमाम हसन (अ०) ने किया था।

प्रमाण के लिए सन् 50 हि० से सन् 60 हि० की घटनायएँ देखी जा सकती हैं। जो समय इमाम हुसैन (अ०) का मुआविया के काल में बीता।

इसी तरह अगर इमाम हसन (अ०) को भी वैसे ही साथी और सहायक मिलते जिन्हें नाना प्रकार से साथ छोड़ के जाने पर बचा लेने का अवसर दिया गया, मगर उन्होंने इमाम हुसैन (अ०) के चरणों में न्योछावर हो जाने को लोक परलोक के प्रत्येक स्वाद से अधिक स्वादिष्ट माना अर्थात "हबीब" और "मुस्लिम" ऐसे प्राणोत्सर्ग करने

(बक़िया पेज न० 13 पर,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,)

थे) के हाथ ख़त भेजा था जनाबे उम्मेसलमा (रज़ी0) ने कि '' मौला अगर रसूल (स0) बिठा न गये होते घर में और हुक्म न दे गये होते कि घर से न निकलना तो मैं खुद आपके साथ आती लेकिन मैं तो मजबूर हूँ।'' और ये फ़रज़न्द उस अली पर निसार हुआ और अपनी जाँ निसारी की, ऐसी हमेशा अहले बैत (अ0) की फ़ेदाकार बीबी जिस ने हुसैन (अ0) को गोद में खिलाया अब वो आई। ''बेटा!खुदा सफ़र मुबारक करे मगर बेटा देखो हर तरफ़ जाना कूफ़े का रूख न करना।'' कल मैं पढ़ चुका हूँ मैं आगे मतलब बढ़ाने के लिये अर्ज़ कर रहा हुँ। तुम्हारे नाना से सुना है कि मेरा बच्चा कूफ़े के क़रीब एक ज़मीन पर शहीद किया जायेगा जिसका नाम ''करबला'' होगा कहा नानी ''मैं भी जानता हुँ जैसा मैंने कल अर्ज़ किया इशारा किया ज़मीने करबला बलन्द हुई और एक मरतबा उम्मेसलमा को ज़ियारत कराई और उसके बाद रवायत की लफ़्ज़ें हैं कि हाथ बढ़ा कर ख़ाक की चुटकी उठाई और कहा ''नानी उस ख़ाक को भी वहीं रख लिजिये जहाँ नाना की दी हुई ख़ाक मौजूद है।'' तो अब दो निशानियाँ उम्मेसलमा (अ0) के पास। एक रसूल (स0) की दी हुई। और एक हुसैन (अ0) की दी हुई। इधर हुसैन (अ0) मदीने से चले और उधर उम्मेसलमा का आलम क्या? कि जब दिल घबराया मालूम नहीं मेरे बच्चे पर क्या गुज़री आयीं देखा वहाँ जहां ख़ाक रखी है देखा ख़ाक, दिल संभल गया, मेरा बच्चा ज़िन्दा है, मेरा हुसैन (अ0) ज़िन्दा है, ख़ाक –ख़ाक है यहाँ तक कि मोहर्रम की पहली तारीख़। अरे उस चांद के साथ न मालूम दिल पर क्या गुज़री कि घबरा कर आयीं बजाये किसी चेहरे देखने के ख़ाक देखी देखा अभी ख़ाक ख़ाक है। फिर संभल गया दिल। दूसरी आयी फ़िर देखा। दिन गुज़रते रहे ख़ाक की ज़ियारत करती रही जैसे आप ताज़ियेखाने की ज़ियारत करते हैं उम्मेसलमा (अ0) ख़ाके करबला की ज़ियारत कर रही हैं यहां तक की दिन गुज़रते–गुज़रते आशूर का दिन आया। सुबह को देखा शीशे में ख़ाक फरमाती हैं नमाज़े ज़ोहर के बाद आँख लग गयी थी अब जो सोयीं तो देखा रेसालत माआब (स0) आये हैं इस तरह की सर के बाल खुले हुऐ आंखों से आंसू बहते हुए हाथों में शीशे जिसमें खून उबलता हुआ ''ऐ खुदा के रसूल (स0) ये सर के बील क्यों खुले हुऐ हैं? ये सर पर ख़ाक कैसी? अरे ये शीशे कैसे जिनमें खून है और ये रो क्यों रहे हैं?'' कहा '' उम्मेसमलमा (अ0) तुम्हें खबर नहीं अभी करबला से आ रहा हूँ।'' गोया बताया मेरा बच्चा मेरे सामने ज़िब्हा कर दिया गया। मैं देख कर तड़प रहा था हुसैन के गले पर छुरी चलती रही। ''ऐ उम्मेसलमा अभी करबला से आ रहा हुँ। एक शीशे में हुसैन का खून है, एक में अंसारे हुसैन का खून है।'' ये ख़्वाब देखा आँख खुली घबरा कर वहाँ आई जहाँ खा़के करबला थी अब जो देखा तो बजाये खाक के खूने ताज़ा जोश मार रहा है ज़मीन पर बैठ गयीं ''मदीने की औरतों अरे मेरा बच्चा करबला में शहीद कर दिया गया। ऐ बीबियों आओ मुझे आन के हुसैन का पुरसा दो, मेरा बच्चा करबला में क़त्ल कर दिया गया।'' मैं कहता हूँ ऐ उम्मुलमोमनीन,ऐ ज़ौजऐ रसूल (स0) सब्र कीजिए आपने खाली शीशे में खून देखा है अब ज़रा ज़ैनब (स0) के दिल की ख़बर लीजिए कि देख रही हैं कि नोके नैज़ा पर सरे हुसैन (अ0) बलन्द है। आवाज़ आ रही है।

अला क़ोतलल हुसैनो बे करबला
अला ज़ोबेहल हुसैनो बे करबला

(पेज न0 15 का बाक़ी,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,)
वाले मिल गए होते और आप को भी ''यज़ीद'' से लड़ना पड़ता जो ''बैअत'' या वध के सिवा किसी तीसरी अवस्था को स्वीकार ही न करता, जो मुसलमान क़त्ल होने वालों के दफ़न किए जाने की अनुमति न देता, जो खुले आम यह कहता कि '' बनी हाशिम'' यानी हज़रत पैग़म्बर (स०) साम्राज्य बनाने का खेल खेले, न कोई फ़रिश्ता उनके पास आया और न कोई ''वह्य'' अवतरित हुई, तो इमाम हसन (अ०) भी वही करते जो इमाम हुसैन (अ०) ने किया।